वर्ष 24, अंक 7 Sr. 422, मुंबई, जुलाई 2025, पन्ने 24 कीमत रु. 5/-

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य एवं उन्हीं के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

उदयपुर में चातुर्मास प्रवेश दि. 4-7-2025

-: संपादक एवं प्रकाशक :-

सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.

M. 84 84 84 84 51 Correspondance Whatsapp only, Website : Divyasandesh.online

शुभ-समाचार

महाराष्ट्र देशोद्धारक, सुविशाल गच्छाधिपति पूज्यपाद
आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के तेजस्वीं शिष्यरत्न,
नमस्कार महामंत्र के बेजोड साधक, नि:स्पृह शिरोमणि,
बीसवीं सदी के महानयोगी पूज्यपाद
पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न,
मरुधर रत्न, गोड़वाड़ के गौरव, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्यपाद

आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

आगामी **31 JANUARY 2026** के
शुभ दिन अपने निर्मल संयम जीवन
के 50 वें वर्ष में मंगल प्रवेश कर रहे हैं ।

संयम सुवर्ण वर्ष के मंगल प्रवेश के इस पावन प्रसंग पर
उनकी जन्मभूमि बाली में...
ओसवाल जैन संघ-बाली (राज.) की ओर से

पंचदिवसीय भव्य महोत्सव

का आयोजन किया गया है ।

महोत्सव दरम्यान अनेकविध धार्मिक अनुष्ठान होंगे ।
इस स्वर्णिम महोत्सव प्रसंग पर पधारने के लिए बाली
नगरवासियों को तथा गुरुभक्तों को
पधारने के लिए **भावभरा निमंत्रण** है ।

रत्न संदेश

लेखक :-

प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

507

प्रशंसा

माता-पिता, गुरु व प्रभु की प्रशंसा प्रत्यक्ष करनी चाहिए । शिष्य व संतान की प्रशंसा प्रत्यक्ष नहीं करनी चाहिए । नौकर की प्रशंसा काम पूरा होने के बाद करनी चाहिए । पत्नी की प्रशंसा, उसके जीते जी कभी न करें । उसकी जीवित अवस्था में करने पर वह दुराचारी भी बन सकती है । किसी के सत्कार्य की प्रशंसा करना अच्छी वस्तु है, परंतु उसमें विवेक तो अवश्य होना चाहिए।

508

उदारता

उदारता तिजोरी में पैदा नहीं होती है अर्थात् तिजोरी तर हो जाने मात्र से जीवन में उदारता नहीं आ जाती है ।
उदारता तो पैदा होती है हृदय में ।
जिस हृदय में उदारता हो उसके लिए सर्वस्व का दान भी आसान है ।
उदारता न हो तो एक कौड़ी का दान भी मुश्किल है ।

जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

मुख्य-सहयोगी

- **अ.सौ. सायरबाई बसंतीलालजी हस्तीमलजी चोपडा-**बाली-निगडी
- **एक सद्गृहस्थ-**कांदिवली-बाली

सहयोगी

- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई)** बाली, ईरोड़
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी** की प्रेरणा से **अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता** मुंडारा-भायंदर
- **स्व. मातुश्री रतनबाई जिन्नालालजी** फागणिया-लुणावा

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी** म.सा.
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)
विहार में संपर्क सूत्र : सहदेव 98672 04942

ऐसे थे गुरुदेव हमारे

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक,
निःस्पृह शिरोमणि, प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर

श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य

संपादक : जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव

श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज

4 वाचनाओं के कतिपय अंश

वाचना दाता : **अध्यात्मयोगी पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.**

वाणी वही होती है, परन्तु अनुभव से निकले शब्द भिन्न प्रभाव डालते हैं । **पूज्य पंन्यासजी महाराज की वाणी साधना-पूत थी ।**

पं. वीरविजयजी के शब्द भी हृदय को झंकृत करने योग्य हैं क्योंकि साधना के द्वारा निकले हुए हैं । `दोय शिखानो दीवडो रे...'

केवलज्ञान एवं केवलदर्शन रूप दो शिखाओं का दीपक सम्पूर्ण ब्रह्मांड में उजाला फैलाता है । यह कल्पना कितनी सुन्दर है !

केवली जब समुदघात करते हैं तब चौथे समय में उनकी आत्मा सर्व-लोकव्यापी बनती है । हम भी उस समय लोकाकाश में ही थे न ? उनके स्पर्श से हमारी आत्मा पवित्र बनती रहती है । ऐसी कल्पना कितनी सुन्दर प्रतीत होती है ?

ऐसे सर्वव्यापी प्रभु को भी भक्त अपने हृदय में समाविष्ट कर सकता है ।

❖ पूज्य कनकसूरिजी, पूज्य देवेन्द्रसूरिजी आदि तथा पूज्य प्रेमसूरिजी जैसों की हमें निश्रा प्राप्त हुई; यह हमारा अहोभाग्य है । **पू. देवेन्द्रसूरिजी के बाद हमें पूज्य पं. श्री भद्रंकरविजयजी महाराज की निश्रा मिली ।**

कितनेक व्यक्ति तो अलग होने के लिए ही शिष्य ढूंढते हैं । समुदाय एवं गीतार्थ - निश्रा संयम के लिए अत्यन्त ही उपकारी है । वृद्ध पुरुष तो इसके लिए अत्यन्त ही उपकारी हैं ।

❖ एक बार पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. ने कहा, `विशेषावश्यक भाष्य, नमस्कार निर्युक्ति में नवकार का अद्‌भुत वर्णन पढ कर लगा, `ओह ! नवकार ऐसा महान् है ! समस्त सूत्र तो हम कब भावित बनायेंगे ? एक नवकार तो भावित बनायें ।

नवकार को आत्मसात् करनेवाला भेदनय से श्रुतकेवली कहलाता है, अभेद नय से चौदह पूर्वी श्रुतकेवली कहलाते है ।

❖ अरिहंतों को नमस्कार, मोक्ष मार्ग प्राप्त करने के लिए ।

सिद्धों को नमस्कार, अविनाशी पद प्राप्त करने के लिए ।

आचार्यों को नमस्कार, आचार में निष्णात बनने के लिए।

उपाध्यायों को नमस्कार, विनय के लिए अथवा विनियोग शक्ति प्राप्त करने के लिए, और

साधु को नमस्कार सहायता गुण प्राप्त करने के लिए है।

हमने इतने नमस्कार किये, हमने कितने गुण प्राप्त किये ? कितने गुण प्राप्त करने की हममें उत्कण्ठा उत्पन्न हुई ?

❖ ये निर्युक्ति के पदार्थ हैं। उपयोगपूर्वक, पडिलेहण करते हुए या इरियावहियं इत्यादि करते हुए आज तक अनन्त जीव मोक्ष में गये हैं।

❖ पू.पं. भद्रंकरविजयजी म. दों घंटो में कितना ही बोल जाते थे। प्रारम्भ में मैं लिखने का प्रयत्न करता। मैं लिखता उससे पूर्व तो वे कहीं के कहीं पहुंच जाते। फिर सोचा, लिखने से काम नहीं चलेगा। उन्हें आदरपूर्वक सुनें। उनके प्रति विकसित आदर से भी कार्य हो जायेगा।

पूज्य पंन्यासजी के पास तीन वर्षों तक रहना हुआ। बहुत जानने को मिला।

❖ विनय-गुण उपाध्याय में सिद्ध हुआ होता है। पू. हरिभद्रसूरिजी का कथन है कि जिन्हें जो गुण सिद्ध हो चुका हो, उनकी सेवा से , उनके नमस्कार से भी हमें वह गुण प्राप्त हो सकता है।

अभी **'भगवती सूत्र'** में जमालि प्रकरण में आया कि देव, गुरु, संघ, कुल, गण आदि की आशातना करनेवाला किल्बीषिक देव बनता है।

डोरा-धागा करने वाले साधुओं को आभियोगिक (नौकर) देव बनना पड़ता है।

❖ अभी मैंने दस माता की बात की थी। गृहस्थों को यदि हम प्रेरणा दें तो हमें कुछ नहीं करना है ?

पू.पं. भद्रंकरविजयजी महाराज ने दूसरों को प्रेरणा दी, उससे पूर्व स्वयं के जीवन में नवकार उतारा (मात्र गिना नहीं पर उतारा) भावित बनाया। कितने ही करोड़ नवकार गिने होंगे ? यह भगवान जाने। फिर तो नवकार पर इतना सूक्ष्म चिन्तन करते कि 'नमो' में सब समाविष्ट कर देते।

कई बार अनुभव के पास शास्त्र पीछे रह जाते हैं। शास्त्रों में उल्लेख न हो वैसी बातें अनुभव में आती हैं।

शास्त्र तो केवल मार्ग-दर्शक हैं, बोर्ड है; अनुभव तो हमें ही करना पड़ता है।

चिदानंदजी, आनंदघनजी के अनुभव पढ़ें।

कौन से शास्त्र में आया ? यह नहीं पूछ सकोगे।

व्यवहार में भी 'गुलाब जामुन' और 'अमरती' की मिठास में अन्तर क्या ? क्या आप शब्दों से कह सकोगे ? गूंगा व्यक्ति तो मिठाई का वर्णन नहीं कर सकता लेकिन बोलता हुआ आदमी भी दोनों मिठाइयों की मिठास में अन्तर बता सकेगा ? वह इतना ही कहेगा कि आप चखें और अनुभव करें।

ज्ञानियों की भी यही दशा होती है।

शास्त्रों का अध्ययन भी आखिर अनुभव हेतु करना है। अनुभव कहें कि समाधि कहें, एक ही बात है। उसके द्वारा आखिर तो आत्मा को सिद्ध करना है।

(क्रमशः)

कर्म को नहीं शर्म

लेखक : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

(गतांक से आगे)

15. पूर्व-भव !!

दासी ने जाकर उस बात में नमक-मिर्च लगाकर विद्युत्मती से बात की । यह बात सुनकर विद्युत्मती के आश्चर्य का पार न रहा । अलंकार नहीं मिलने से वह भी एकदम उदास बन गई । उसने अपने पति प्रजापाल से बात की ।

प्रजापाल ने वह बात अपने ज्येष्ठ बंधु कामजित से की ।

कामजित ने प्रीतिमती को समझाते हुए कहा, **``क्या अभी तक तूने वे अलंकार नहीं लौटाए ? सच बोल, वे अलंकार कहाँ हैं ।''**

प्रीतिमती ने कहा, ``वे अलंकार मुझे अत्यंत ही पसंद पड़ गए हैं अतः अब वे अलंकार किसी भी हालत में मैं देना नहीं चाहती हूँ, यद्यपि वे अलंकार मेरी तिजोरी में ही सुरक्षित हैं, परन्तु मेरी पसंदगी के कारण ही मैंने झूठ का आश्रय लिया है ।''

रानी की इस कपट लीला को सुनकर एक बार तो कामजित को भी गुस्सा आ गया । उसने प्रीतिमती को खूब समझाया, परन्तु स्त्री हठ के आगे उसे भी झुकना पड़ा ।

प्रीतिमती ने कामजित पर दबाव डालते हुए कहा, ``यह सत्य घटना आप किसी को कहेंगे तो उसमें आपका हित नहीं है ।''

आखिर कामजित ने भी प्रजापाल को समझाते हुए कहा, ``वे अलंकार महारानी ने इधर-उधर रख दिए हैं, मिलने पर वे तुम्हें लौटा देंगी ।''

इस बात को जानकर प्रजापाल भी आकुल-व्याकुल हो गया ।

वह सोचने लगा, ``अहो । इस छोटी सी वस्तु के लिए बड़े भाई व भाभी मेरे साथ विश्वासघात करने के लिए तैयार हो गए ।''

इस विश्वासघात के पाप से प्रजापाल व विद्युत्मती को अत्यंत ही आघात लगा ।

देवदत्ता दासी ने भी प्रीतिमती रानी को अलंकार वापस लौटा देने के लिए समझाया, फिर भी उससे एक न सुनी ।

कुछ समय बाद उस नगर में ज्ञानी गुरु भगवंत का आगमन हुआ । दोनों भाई अपने परिवार के साथ गुरु भगवंत के दर्शन-वंदन के लिए उद्यान में आए । गुरु भगवंत ने भव्यजीवों के हित के लिए

धर्मोपदेश दिया और उस उपदेश में विश्वासघात की भयंकरता का इस प्रकार हृदयस्पर्शी वर्णन किया कि जिसे सुनकर कामजित व प्रीतिमती का हृदय पश्चाताप से भर आया । वे अपने पाप की घोर निंदा करने लगे । प्रीतिमती ने वे सब अलंकार विद्युत्मती को सौंप दिए और अपने अपराध की उसने हृदय से क्षमायाचना की ।

परिवार में पुनः स्नेह का संबंध स्थापित हुआ ।

काल का प्रवाह आगे बढ़ने लगा ।

एक दिन कामजित अपनी पत्नी प्रीतिमती के साथ नगर के बाह्य सरोवर में जलक्रीड़ा हेतु गया । सरोवर में अनेक जलचर प्राणी थे ।

अचानक कामजित ने एक महाकाय जलचर प्राणी को देखा । उसे अपनी ताकत की परीक्षा करने का मन हो गया । उसने अपनी भुजाओं के बल से उस महाकाय जलचर प्राणी को सरोवर से बाहर किनारे पर ला दिया । पानी के बिना वह प्राणी छटपटाने लगा ।

कुछ देर बाद कामजित को पुनः दया आ गई और उसने उस जलचर प्राणी को पुनः सरोवर में डाल दिया ।

इस प्रकार हँसते-हँसते कामजित ने अनेक प्रकार के पाप कर्म बाँध लिये ।

कामजित् अपनी पत्नी के साथ जंगल के मार्ग में से प्रसार हो रहा था । अचानक उसने एक मुसाफिर को देखा । वह मुसाफिर रत्नों का व्यापारी कुशल जवेरी था । यद्यपि कामजित लुटेरा नहीं था...परंतु क्षणिक आनंद के लिए उसने उस व्यापारी को लूंट लिया । रत्नों की लूंट के कारण वह व्यापारी मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ा । आखिर कुछ समय बाद दया खाकर उस कामजित् ने वे रत्न उस व्यापारी को सौंप दिये ।

पापकर्म करते समय जीवात्मा इस बात को भूल जाता है कि आज नहीं तो कल, जब यह पाप कर्म उदय में आएगा, तब मेरी क्या हालत होगी ?

हँसते-हँसते बँधे हुए कर्म रोते-रोते भी छूटने वाले नहीं हैं ।

वन में आगे बढ़ते हुए कामजित व प्रीतिमती किसी देवी के मंदिर में पहुँच गए । उस मंदिर में एक रुपवती कन्या देवी की उपासना कर रही थे, उसके गले में रत्नों का कीमती हार था । वह हार देखकर प्रीतिमती ललचा गई और वह हार लेने के लिए उसने अपने पति को प्रेरणा दी ।

पत्नी की प्रेरणा पाकर कामजित ने जबरन उस युवती से वह हार छीन लिया ।

हार चले जाने से वह युवती जोर से रुदन करने लगी, आखिर कामजित का हृदय पिघल गया और उसने वह हार उसे वापस दे दिया ।

नगर में प्रवेश करते समय कामजित ने एक गरीब दंपती को देखा । आर्थिक लाचारी के कारण उन दोनों पति-पत्नी की स्थिति अत्यंत ही दयनीय थी । उनकी इस स्थिति को देखकर कामजित को दया आ गई और उन्हें अपने महल में नौकरी दे दी । वणिक् की स्त्री अत्यंत ही शांत स्वभाव वाली और

मेहनती थी...परन्तु सत्ता के मद के कारण प्रीतिमती उसकी बार-बार भूलें निकालती रहती और छोटी-छोटी बातों में ठपका देती रहती।

एक बार बिना किसी अपराध के भी प्रीतिमती उस स्त्री को महल से बाहर निकालने के लिए तैयार हो गई, कामजित ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, परन्तु उसने अपनी हठ नहीं छोड़ी। आखिर उन दोनों को नौकरी से निकला दिया गया।

वाराणसी नगरी में संत महात्माओं का आवागमन चालू ही था। एक बार किसी महात्मा ने राजा के महल में भिक्षा के लिए प्रवेश किया। राजा ने जैसे ही उन महात्मा को देखा-अत्यंत ही तिरस्कार भरे शब्दों में कहा, ``अरे ! यह ठग कहाँ से आ गया ? निकालो इसे बाहर'' इतना कहकर उसने तिरस्कार व धक्के लगाकर महात्मा को महल में से बाहर निकलवा दिया।

एक बार कामजित ने किसी महात्मा को भिक्षादान में अंतराय किया, इतना ही नहीं उसने उन महात्मा की श्री भरकर निंदा भी की।

एक बार कामजित जंगल में से प्रसार हो रहा था। उस जंगल में एक महात्मा एकांत में किसी वृक्ष के नीचे गोचरी कर रहे थे। महात्मा को देख आवेश में आकर उस कामजित ने महात्मा के पात्र को ठोकर मार दी और सब आहार बिखेर दिया। इतना ही नहीं, उसने महात्मा को परेशान भी किया। कुछ समय बाद उसने महात्मा को छोड़ दिया।

एक बार कामजित जंगल में से प्रसार हो रहा था। उसने क्रीड़ा करते हुए बंदरी व उसके बच्चे को देखा। कुतूहल वश उसने बंदरी के बच्चे को पकड़ लिया। माँ के वियोग में वह बच्चा जोर से चिल्लाने लगा। आखिर उसे दया आ गई और उसने उस बच्चे को मुक्त कर दिया। वह बच्चा माँ के पास चला गया।

वन में घूमता हुआ कामजित किसी महात्मा के आश्रम में आ पहुँचा। आश्रम में एक ओर कोने में जल पात्र रखकर वे महात्मा लघुशंका के लिए कहीं दूर गए हुए थे, तभी मजाक में आकर उस कामजित ने महात्मा के जलपात्र को कहीं छिपा दिया। थोड़ी देर बाद वे महात्मा आश्रम में आए। उन्हें अत्यंत प्यास लगी हुई थी, वे जलपात्र ढूंढ रहे थे। प्यास के कारण वे महात्मा अत्यंत ही आकुल-व्याकुल बन गए थे।

आखिर महात्मा की दयनीय स्थिति देखकर उस कामजित ने वह जल-पात्र पुनः महात्मा को सौंप दिया।

महात्मा ने थोड़ा भी गुस्सा नहीं किया और कामजित को दयामूलक धर्म का स्वरूप समझाया। महात्मा के उपदेश को सुनकर कामजित का हृदय पिघल गया। उसे अपने पाप का पश्चात्ताप हुआ और जीवन में पुनः इस प्रकार का अयोग्य आचरण नहीं करने का संकल्प किया। कामजित वापस नगर में लौट रहा था। तभी उसने एक हिरण को देखा। हिरण के पैर में बेल फँस जाने के कारण वह दौड़ने में असमर्थ था। कामजित को कुछ दया आ गई। उसने तलवार से वह बेल छेद डाली। तुरंत ही वह हिरण बंधन से मुक्त हो गया। कूदता हुआ वह अन्यत्र चला गया। **(क्रमशः)**

आत्मा अकेली है !

वैराग्य दीप हृदय प्रदीप

लेखांक-27

विवेचनकार :– **मरुधर रत्न पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
नवोदित लेखक :– **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**

एकः पापात् पतति नरके याति पुण्यात् स्वरेकः,
पुण्यापुण्यप्रचयविगमाद् मोक्षमेकः प्रयातिः ।
सङ्गान्नूनं न भवति सुखं न द्वितीयेन कार्यं,
तस्मादेको विचरति सदाऽऽनन्द सौख्येन पूर्णः ।।27।।

शब्दार्थ

एक:=अकेली आत्मा, **पापात्=**पाप के कारण, **पतति=**गिरती है, **नरके=**नरक में, **याति=**जाती है, **पुण्यात्=**पुण्य के कारण, **स्व:=**स्वर्ग में, **एक:=**अकेली आत्मा, **पुण्यापुण्यप्रचयविगमाद्=**संग्रहित पुण्य-पाप से मुक्त होने के कारण, **मोक्षमेक:=**अकेली आत्मा मोक्ष में, **प्रयाति=**चली जाती है, **सङ्गात्=**संबन्ध से, **नूनं=**निश्चय से, **न भवति=**नहीं होती है, **सुखं=**आनंद, **न द्वितीयेन=**किसी अन्य से नहीं, **कार्यं=**काम है, **तस्मात्=**इसलिए, **एको=**अकेली आत्मा, **विचरति=**रहती है, **सदा=**हमेशा, **आनन्द सौख्येन=**आनंद सुख से, **पूर्ण:=**भरपुर ।

गाथार्थ

अकेली आत्मा पाप के कारण नरक में गिरती है, अकेली आत्मा पुण्य के कारण स्वर्ग में जाती है । संग्रहित पुण्य-पाप से मुक्त होने के कारण अकेली आत्मा ही मोक्ष में जाती है । वास्तव में संबंध से सुख नहीं होता है, इसलिए किसी अन्य से कोई काम नहीं है । अकेली आत्मा ही आनंद और सुख से भरपुर रहती है ।

विवेचन

संसार और मोक्ष साँप-सीढी के खेल जैसा है । सांप-सीढी के खेल में सांप काटने पर व्यक्ति नीचे उतरता है और सीढी मिलने पर ऊपर चढता है । अंत में एक से सौं तक अंकों की सफर पूरी होती है तब खेल पूरा होता है । संसार में भी कुछ ऐसा ही है । संसार के खेल में पाप के कारण आत्मा नरकादि दुर्गति में गिरती है और पुण्य के कारण स्वर्गादि सद्गति को प्राप्त करती है । अंत में जब पुण्य और पाप कर्म का पूर्णतया क्षय हो जाता है तब, आत्मा अकेली सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष में चली जाती है । सांप-सीढी के खेल में खिलाडी को जीत पाने के लिए अकेले ही महेनत करनी पडती है, वैसे ही आत्मकल्याण के मार्ग में भी प्रगति पाने के लिए जीवात्मा को स्वयं ही महेनत करनी पडती है ।

किसी अन्य के द्वारा की गई आत्म साधना से किसी अन्य को मोक्ष प्राप्त हो जाय, ऐसा न कभी हुआ है, न कभी होगा । ग्रंथकारश्री इसी बात को स्पष्ट बताकर कह रहे है कि तुम यदि आत्म साधना में अन्य के संग की अपेक्षा रखते हो, तो वह निरर्थक है । आत्मिक सुखों को पाने के लिए सभी प्रकार के बाह्य संयोगों का त्याग करना जरुरी है । सम्बन्धों के त्याग से ही आत्मा अपने अनंत आनंद में लीन होगी । नश्वर को छोडे बिना शाश्वत सुखों की प्राप्ति होना असंभव है ।

रेशम का कीडा अपनी सुरक्षा के लिए अपने शरीर को अपने मुख से लार निकाल कर चारों ओर वेष्टित करता है परंतु, सुरक्षा की आशा में किया गया यही प्रयास उसकी मौत का कारण बनता है । रेशम के अखंड धागे को पाने के लिए उस कीडे को गर्मागर्म पानी में डाल कर मार दिया जाता है । उसकी इस दशा को देखकर हमे उस पर दया आती है, परंतु इस अनादि-अनंत संसार में सभी संसारी जीवों की यही दशा है । रेशम के कीडे की तरह भवोभव करुण मौत को पाती हुई हमारी आत्मा की दया हमें नहीं आती, यह बडा आश्चर्य है ।

चार गति रुप इस संसार में हमारी आत्मा ने जहाँ भी जन्म लिया, वहाँ हमने आत्मा से भिन्न ऐसे शरीर, घर, सगे-सम्बन्धियों के साथ संयोग सम्बन्ध का विशाल वर्तुल खडा किया है । मात्र इस मनुष्य जन्म की ही बात की जाय तो माता के गर्भ में आहार के पुद्गलों को ग्रहण कर शरीर इन्द्रियाँ आदि बनाए । जन्म के बाद सबसे पहला सम्बन्ध माता से जोडा । आगे चलकर पिता, भाई, बहन, चाचा-चाची, मामा-मामी, दादा-दादी, नाना-नानी आदि का परिचय हुआ । माता के सभी सम्बन्धी को अपने सम्बन्धी बना दिये । फिर अडोस-पडोस के बच्चे, खेल-कुद के दोस्त, स्कुल के दोस्त, कॉलेज के दोस्त, व्यवसाय के दोस्त आदि से सम्बन्ध जुडता गया । अरे ! शादी होने के बाद तो पत्नी के सारे सगे-सम्बन्धी अपने हो गए । सास, श्वसुर, साला, साली, साढूभाई आदि सारे सम्बन्ध बढने से दुगने हो गए ।

व्यक्ति इन सम्बन्धों में अपने आप को सुरक्षित मानता है । नए-नए सम्बन्धों को जोडकर खुश होता है परंतु, वह नहीं जानता कि यह सारे सम्बन्धों का जाल रेशम के कीडे के द्वारा बनाए रेशम के धागे समान ही है । इन सारे सम्बन्धों की ममता के कारण जीवात्मा को जन्म जन्मों तक बेमौत, करुण मौत मरना पडता है । रिश्तों को संजोए रखने के लिए व्यक्ति दिन-रात अथक प्रयास करता है । प्राय: संसार के सभी रिश्ते पैसों के आधार पर टिकते है । अत: पैसों की कमाई के लिए व्यक्ति को काली मजूरी भी करनी पडती है । दुकान का नौकर तो आठ घंटों की नौकरी करके अपना पगार लेकर छूट जाता है, परंतु दुकान के मालिक को दिन-रात चिंता करनी पडती है, जिसके लिए उसे कोई पगार भी नहीं मिलता ।

सम्बन्धों के सुख को पाने व्यक्ति व्यापार में अन्याय और अनीति करता है । उसके द्वारा कमाए हुए धन में सभी भागी दार हो जाते है परंतु उसकी सजा तो उसे अकेले ही सहनी पडती है । धन में सभी भागीदार बनने वाले पाप में कोई भागीदार नहीं बनते है ! हाय कैसा संसार !

घी का व्यापारी

एक सेठ को घी का बडा व्यापार था । एक दिन दुकान पर बैंठे उसने ग्राहक को ठगते हुए दुगुनी कीमत में घी बेचा । आज एक किलों घी का फायदा हुआ है, इसलिए परिवार के साथ घेबर खाने की इच्छा से उसने अपने नौकर के साथ एक किलो घी घर भेजकर घेबर बनाने का संदेश दिया ।

रोज तो रोटी और सब्जी खाते है, आज परिवार के साथ घेबर खाने मिलेंगे इस आशा में दुकान का कार्य निपटाकर शाम को जल्दी-जल्दी घर पहुँचा । भोजन की तैयारी हुई परंतु आज भी थाली में रोटी-सब्जी !

पत्नी पर गुस्सा करते हुए पूछा, 'क्या रामु घी लेकर नही आया था ?'

पत्नी, 'आया था ।'

सेठ, 'तो घेबर नहीं बनाए ?'

पत्नी, 'बनाए थे ।'

सेठ, 'तो कहाँ है घेबर ?'

पत्नी, 'घेबर तैयार कर आपका इन्तजार ही कर रहे थे, तब अपने मित्रों के साथ जमाई-सा आ गए थे । अत: घेबर लो उन्हें परोस दिये । उन्हें वापस जल्दी लौटना था, इसलिए आपको समाचार नहीं भेजे ।

सेठजी की परिवार के साथ घेबर खाने की इच्छा धूमिल हो गई ।

दुकान पर बैठकर जिस ग्राहक को सेठ ने ठगा था, उसने जाकर राजा को शिकायत की । राजा ने सेठ के घर सैनिक भेजे और सेठ को जेल में डालकर सौ हंटरो की कडी सजा की ।

बिचारा सेठ, घेबर तो न खा सका लेकिन अन्याय-अनीति की सजा उसे अकेले ही सहनी पडी ।

संत वाल्मिकी

एक समय का खुंखार लुटेरा वालिया जंगलों के रास्ते जानेवाले सभी को लूटता था । एक दिन एक संत उस रास्ते से जा रहे थे । चाकू दिखाते हुए धमकी दी-''बाबाजी ! तुम्हारे पास जो कुछ है वह रख दो ।''

संत तो फकीर थे, उन्होंने कहा, ''मैं अपने पास जो कुछ है वह तुम्हें देने के लिए तैयार हूँ परंतु, यह लूंट तुम किसके लिए करते हो ?''

वालिये लुटेरे ने कहा, ''अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए ।''

संत ने फिर से प्रश्न किया-''लुंट के पैसों में पूरा परिवार भागीदार है, परंतु क्या इस लुंट के पाप में तुम्हारा परिवार भागीदार है ?''

वालिये लुटेरे ने कहा, ''बेशक ! इस पाप में वे भी भागीदार ही हैं ना !''

संत ने कहा, ''मैं यही खडा हुँ । तुम घर जाकर अपने परिवार को पूछकर आओ ।''

वालिया लुटेरा घर गया । परिवार के सभी सदस्यों को इकट्ठा करके संत के द्वारा पूछे गए सवाल की बात की और पूछा-''क्या तुम सभी मेरे पाप में भागीदारी लेने के लिए तैयार हो ?'' सभी ने इन्कार कर दिया ।

वालिया लुटेरा परिवार के प्रत्युत्तर को लेकर संत के पास पहुँचा । संत से सारी बात की । संत ने उसे संसार की असारता और सम्बन्धों में रही स्वार्थ वृत्ति का उपदेश दिया । संत के उपदेश को पाकर उसने संसार का त्याग किया । वालिया लुटेरा मिटकर वाल्मिकी संत बन गए ।

ये दोनों उदाहरण हमें यही संदेश देते है कि सांसारिक सम्बन्धिओं के प्रति ममत्व को दूर कर सर्व जीवों के प्रति समता भाव प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए । इस भव के सम्बन्धियों को हम अपने मानते है, परन्तु वास्तव में जगत् के सभी जीव अपने किसी न किसी भव के सम्बन्धी जरुर बने है । अत: मात्र इस भव के नहीं बल्कि भवोभव के सम्बन्धों को निभाने सांसारिक बंधनों को त्याग कर गुरुकुलवास में रहकर आत्म कल्याण के मार्ग में आगे बढना चाहिए । आत्म कल्याण के मार्ग में किसी की राह देखना व्यर्थ है । कोई साथ दे न दे, यदि हृदय में आत्मकल्याण की इच्छा हो तो अकेले भी परमात्मा के बताए मार्ग पर चलने के लिए प्रयत्नशील बनना चाहिए ।

शंका-स्वजनों के स्नेह में इतने दु:ख है तो क्या संसार में रहकर अकेले जीवन (Solo-Living) नहीं जीया जा सकता है ?

समाधान-नहीं, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । उसके जीवन और संस्कारों की सुरक्षा लोगों के बीच में ही है । वर्तमान में इस तरह के अकेलेपन (Solo-Living) का जीवन प्रचलित हुआ है । परंतु यह कोई त्याग नहीं बल्कि मात्र स्वार्थ केन्द्रित है ।

जीवों को जड के प्रति अत्यंत आसक्ति है, जबकि जीवों के प्रति द्वेष है । जड के राग के कारण व्यक्ति संसार के सुखों को छोडने में समर्थ नहीं है और स्वार्थ वृत्ति के कारण अपने सुखों को बांटने की भावना भी नहीं है । इसलिए कई जगह इस तरह सांसारिक सुख के कारण अकेलापन देखा जा रहा है । सुखी होने की चाह में व्यक्ति अनैतिक मार्ग की ओर खींचा जा रहा है । सबसे पहले व्यक्ति अधिक से अधिक पैसा कमाकर अमीर होना चाहता है, ताकि वह जीवन भर ऐश कर सके ।

विदेशों में व्यक्ति बडी-बडी कंपनियों में नोकरी करता है । उसे अपने जीवन में किसी की दखलंदाजी पसंद नहीं है । वह जिम्मेदारियों से दूर भागता है । दुनिया में हर वस्तु किराए से मिलती है । करोडों की स्थायी संपत्ति बनाने की जगह व्यक्ति घर, दुकान, गाडी बंगले सभी किराए से लेता है । यहाँ तक कि पहनने के महंगे कपडे और कीमती आभूषण भी किराए से लेता है । वह यहीं सोचता है कि करोडो की स्थायी संपत्ति खरीदने की जगह अपने पैसों को बैंको में, शेयर बाजारों में अथवा सोने-चांदी में निवेश कर रखों । उसके द्वारा आने वाले मुनाफे से घर खर्च चलाओ और अपनी बेन्क बेलेन्स को मजबूत बनाओ ।

स्वार्थ की वृत्ति इतनी बढ रही है कि आज व्यक्ति शादी के बंधनों से दूर भागने लगा है । शादी करके पछताने से अच्छा है कि शादी ही नहीं करनी । शादी होने के बाद सम्बन्ध लम्बे नहीं टिकते है, इसलिए व्यक्ति अत्यधिक मानसिक तनाव में जीता है । इसके बजाय पैसों के बल पर राजा की तरह जीवन जीना पसंद करता है । विदेशों में कई जगह यही चलन चल रहा है । लीव इन रिलेशनशीप के माध्यम से पत्नी भी भाडे पर ले लेता है । हर वर्ष घर बदलने के साथ पत्नियाँ भी बदली जाती है । बच्चों का पालन पोषण बोझ लगता है इसलिए बच्चों को पालने की जगह, बडे-बडे पैसे वाले जानवरों को पालना पसंद करते है ।

पैसे कमाने का भूत इतना बढ गया है कि कदाचित् व्यक्ति शादी करता भी है तो DINK अर्थात् Double Income No Kids का फॉर्मूला बना रखा है । पति-पत्नी दोनों नौकरी करते है । पैसो की आय बढी है और बच्चों की जिम्मेदारी नहीं है, सास-श्वसुर का बंधन नहीं है इसलिए पैसों का संग्रह मात्र मौज-शोक के पापों में उडाया जाता है । पैसों के आधार पर बने मित्रों के 8-10 जोडे विदेशों में घुमने जाते है और वही पत्नी-सहित Bedroom Exchange के पाप में डुब जाते हैं । पर्यटन स्थल के सभी रिसोर्ट और होटले सुरा और सुन्दरी के पापों के अड्डे बने रहते है ।

स्वार्थ के सुख का भूत आज इस तरह सवार हुआ है कि आज वैश्विक स्तर पर जनसंख्या घटाने के नाम पर सामुहिक हत्या के षड्यन्त्र चल रहे है । जैसे खेत में फसल पैदा होने तक किसान उसमें पानी का सिंचन एवं सुरक्षा के प्रबंध करता है, परंतु जैसे ही अनाज पक जाता है, स्वयं किसान अपनी फसल को काट देता है । इसी विचार से आगे बढता हुआ पहले जानवरों के प्रति और अब इन्सानों के प्रति भी व्यक्ति निर्दयी बना है । Resources Crises के नाम पर ऐसा पढाया जा रहा है कि यदि जनसंख्या युंही बढती रही तो कुछ वर्षों के बाद Petrol, Diesel आदि कई सारे जीवनोपयोगी खनीज पदार्थ मात्र Museum में ही देखने मिलेंगे । ऐसे में यदि इन खनिज पदार्थों की रक्षा करनी है तो जनसंख्या घटानी होगी । इसलिए जब तक व्यक्ति ससक्त है, तब तक उसका पोषण होना चाहिए, बाद में नहीं । इसी विचार से प्रेरित होकर कृत्रिम महामारी के प्रयोग भी किये जा रहे है ।

एक छोटे-से जीव हिंसा का विचार भी भयंकर होता है, तो सारी दुनिया के लोगों की हिंसा का विचार तो कितना भयंकर हो सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है । इन सभी विचारों का मूल कारण स्वार्थ भावना है । बस, मुझे सुखी होना है, बाकी दुसरों का जो कुछ भी हो ।

अत: अकेलेपन में जीवन जीने के विचारों को छोड आत्मा को एकत्व भावना के साथ भावित करना है । अकेलेपन के विचारों में जीवों के प्रति द्वेषभाव और अपने अकेले के सुख की चिन्ता होने से स्वार्थ भाव है । जबकि एकत्व भावना में सभी जीवों के प्रति स्नेह और मैत्री का भाव होने से परोपकार भाव है । **(क्रमश:)**

प्रेरक कहानियाँ

लेखक :
प.पू.आचार्यदेव
श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

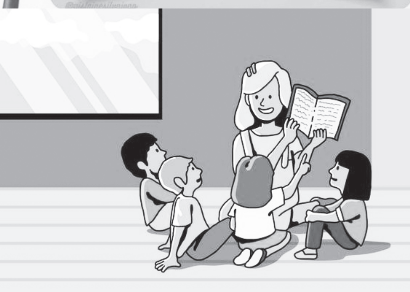

131. क्षणभंगुर का आकर्षण

जो चीज जितनें जल्दी क्षीण होती है, उतनी ही कीमती मालूम होती है ! पत्थर के फूल की कीमत नहीं होती है, संध्या को क्षीण हो जाने वाले फूल की कीमत होती है ।

132. कैसा कुतर्क ?

सूरजमल दवाई का विक्रेता है, उसने दवाइयों पर Lable लगाया, फायदा न हो तो दाम वापस । एक ग्राहक ने दवाई खरीदी, परन्तु महिनों तक फायदा नहीं हुआ तो उसने सूरजमल को शिकायत की ! सूरजमल ने कहा Lable पर क्या लिखा है ? फायदा न हो तो दाम वापस । तुम्हें फायदा नहीं हुआ, परन्तु मुझे तो फायदा हो गया न ! वह फायदा तुम्हें हो या मुझे हो यह तो अपनी शर्त नहीं है ।

133. कैद भी गुन्हा सीखाती है

एक कैदी कारागृह से दसवी बार मुक्त हुआ तो Jailer ने कहा–तेरी आधी जींदगी तो Jail में गई, अब ख्याल रखना कि वापस जेल का मुंह देखना न पड़े ! उसने कहा, 'आपकी बात ठीक है, अब तो मुझे जेल के साथियों से ऐसी ट्रीक मिल गई है कि अब पुन: पकड़ा ही नहीं जाऊंगा ।'

134. यह भी कोई तर्क है ?

1) बडे मुल्लाने एक बार संध्या को 15-20 मित्रों को अपने घर भोजनार्थ आमंत्रण दे आया ! मित्र के साथ मुल्ला भी अपने घर आया परन्तु घर में अनाज व सब्जी के भी फाफे थे ! मुल्ला ने पत्नी को कहा- 'तुं ही बता' अब क्या करे, मित्र तो बाहर खडे हैं । अंत में पत्नी ने जाकर कह दिया 'मूल्लाजी घर पर नहीं है ।' मित्रों ने कहा, 'अभी तो हमारे साथ आए है । तर्क होने लगे तो ऊपरी मंजिल की खिडकी से झांक कर मुल्लाजी बोले ''पीछे के दरवाजे से बाहर निकला हो'', यह भी तो हो सकता है-'सभी मित्र हंस पड़े ।'

2) एक विद्वान् ज्योतिषी आकाश के तारों को देखते-देखते जा रहे थे, अचानक गड्डे में जा गिरे, पीछे से एक सज्जन ने आकर उन्हें निकाला और कहा-हजारों मील दूर रहे ग्रहों व नक्षत्रों की गति का हिसाब लगा रहे हो और पैर तले रही जमीन का पता ही नहीं है ।

हम जीवन में लम्बी योजना बताते है, परन्तु क्या अपने वर्तमान समय का वास्तविक मूल्यांकन करते है ?

135. ममत्व से दु:ख !

एक मकान में आग लगी । मालिक रोने लगा । तभी भीड़ में से किसी ने कहा, 'रोओ मत !' तुम्हें पता नहीं, यह मकान तो कल ही तुम्हारे पुत्र ने बेच दिया है ! मकान अभी भी जल रहा है-परन्तु उसके आंसू रूक गये !

तभी बेटा भागकर आया-बातचीत हुई तो पता चला–''कल मकान बेचने की सिर्फ बात हुई थी, बेचा नहीं था ! तभी पुन: आंसू की धारा चालू हो गई ।

आंसू मकान जलने से नहीं आ रहे है और न ही न जलने से रुकते है, परन्तु मकान का स्वामित्व 'ममत्व' ही आदमी को हंसाता और रुलाता है ।

136. पुरुषार्थ पूर्ण होना चाहिये !

खेत में पानी के लिए एक किसान ने एक कुँआ खोदना चालू किया, 12-15 फूट पर पानी नहीं निकला तो उसने दूसरा कुँआ खोदना चालू किया, इस प्रकार 8 कुँए खोदने पर भी पानी नहीं मिला ।

उसे किसी बुद्धिमान ने समझाया कि भिन्न-भिन्न स्थलों पर अधिक महेनत करने के बजाय एक ही कुएँ पर पूरी महेनत की होती तो अवश्य पानी मिल जाता !

धर्मादि में पुरुषार्थ तो सभी करते है, परन्तु धैर्य के अभाव व फल प्राप्ति की उत्सुकता के कारण पूर्ण पुरुषार्थ नहीं करते है और इस कारण फल की प्राप्ति भी नहीं होती है ।

137. भौतिक सुख की आशा !

गौतम राजकुमार के जन्म पर राजा शुद्धोधन ने 8 पंडितों को भविष्य जानने के लिए बुलाया । सात ने दो विकल्प कहे–'चक्रवर्ती बनेगा अथवा संन्यासी ! राजा के मन दूसरे विकल्प की अधिक कीमत थी ! आठवें ने कहा-'संन्यासी बनेगा !' फिर भी राजा ने तर्क किया कि 'सात ही ठीक होंगे-एक ठीक कैसे हो सकता हैं ?' सुख की कैसी आशा है ?

138. सुख के पीछे-दु:ख की फौज !

एक कुत्ता कहीं से रोटी की थप्पी उठा ले आया, यह देखते ही 5-6 कुत्ते उसकी ओर भागे ! रोटी न छोड़ने के कारण उसके शरीर पर अनेक घाव कर दिये, अंत में रोटियाँ छोडी और उन्हें लेकर कुत्ते भाग गयें ।

वास्तव में हमला उस कुत्ते पर न था किन्तु रोटियों पर था, रोटी छोड़ दी होती तो कोई भी उसका बाल बांका करनेवाला नहीं था ! एक सुख के मोह के पीछे दु:ख की फौज आ गिरती है ।

139. कृपण दिल

रॉक फेलर जब भी लंदन आता तो हॉटल का सबसे सस्ता कमरा शोधता ! अखबार में उसका फोटों निकलता ! हॉटल मालिक उसे पहिचान लेता और कहता आप के बेटे तो कीमती कमरा शोधते थे और आप सबसे सस्ता ? रोक फेलर ने कहा वे मोज उडा रहें हैं क्योंकि वे अमीर बाप के बेटे है, परन्तु मैं इतना भाग्यशाली नहीं हूँ, क्योंकि मैं गरीब बाप का बेटा हूँ ।

140. दुर्भाग्य

चेनाराम हर साल रोता है कि इस साल फसल खराब हो गई, इस साल धूप ज्यादा रही...इस साल कुछ फायदा न हुआ ! एक बार बहुत ही सानुकूल वर्षा हुई । चारों ओर अद्भुत फसल हुई थी, परन्तु फिर भी चेनाराम सिर पर हाथ रखें द्वार पर उदासीन बैठा था ! मित्र ने कारण पूछा तो कहा, 'क्या करुं ! इस साल फसल बोई नहीं थी !'

141. गुप्तता-अति कठिन

दयाराम को उसके मित्र ने पूछा–'तुमने अपने जीवन के रहस्य की कुंजी प्राप्त कर ली है, कुछ मुझे भी बता दो, दयाराम ने कहा-वह बडी गुप्त बात है, मित्र ने कहा–'मैं भी उसे गुप्त रखने की कोशिश करुंगा ।

दयाराम ने कहा-तुं कसम खमले कि उसे गुप्त रखेगा । मित्र ने कसम खाई तो दयाराम ने कहा-मुझे जीवन की जिसने कुंजी दी है, उसके आगे मैंने भी कसम खाई है, अत: यदि मैं गुप्त न रखू तो तूँ क्या गुप्त रख सकेगा, चले जाओ ।

142. मन के लड्डू

शेख चिल्ली सिर पर दूध की मटकी ले जा रहा था और मन में विचार कर रहा था कि दूध के 5 रु. मिलेंगे, फिर बकरी-गाय-भैंस-खरीदूंगा । धन बढेगा, शादी करुंगा बच्चे होंगे, तो कोई दाढ़ी में हाथ डालेगा उसको बचाने के लिए सिर हिलाया और दूध की मटकी सड़क पर टूट-फूट गई-5 रु. भी खो दिये ।

143. अविश्वासी दुनियाँ

बेटें को ज्यादा शक्तिशाली बनाने के लिए बाप ने बेटे को कहा, 'चढ़ जा सीढी से ! बेटा चढ़ गया और बाप ने सीढ़ी हटा दी और बेटे को कहा 'कूद जाओ !' बेटा बोला-कूदा तो हाथ पैर टूट जायेंगे ?

पिता ने कहा-मैं मौजूद हूँ, चिंता न कर, संभाल लूंगा ! अंत मे बेटा कूदा और बाप दूर हो गया, गिरा तो कुछ चोंट भी लगी । बेटे के रोने पर बाप ने कहा-'किसी का विश्वास मत करना, अपनी बुद्धि से चल ।'

(क्रमश:)

शांत सुधारस

जीवन में शांति का उपाय

विवेचनकार : **प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

बेटे ने कहा-``पिताजी ! आप सुज्ञ हो । आप यह कैसी बात करते हो ? आज तक कौन किसके साथ चला है ?''

सेठ ने कहा-``बेटा ! यह कैसी बात करता है । मैंने तेरे लिए क्या नहीं किया ? तेरी शिक्षा के लिए मैंने कितना श्रम उठाया ? मेरे धन का मालिक भी तू बनेगा.....फिर भी इस उपकार का यह परिणाम ?''

बेटे ने नम्रता से कहा-``पिताजी ! आपने मुझ पर महान् उपकार किया है, परन्तु अधिक-से-अधिक मैं आपके साथ श्मशान तक आ सकूंगा.....इससे अधिक नहीं । कदाचित् मैं यहाँ उपस्थित नहीं रहा, तो भी प्रथम मेसेज मुझे ही होने वाला है । दूर शहर से भी आकर आपकी श्मशान-यात्रा में शामिल होऊंगा । अन्त में आपकी चिता में सर्वप्रथम अग्नि-प्रज्वलित करने का आदेश भी मुझे ही मिलेगा ।''

सुनते ही सेठजी को दिन में तारें दिखने लगे । सोचने लगे-``अहो ! जिसके लिए जीवन भर मेहनत की.....वही मेरी देह में आग लगाएगा.....ओहो ! धिक्कार हो इस संसार को..... यहाँ कोई भी मेरा साथी नहीं ।''

अन्त में, चौबीस घंटे जिसकी सेवा की जाती है, उस काया से सेठ ने प्रश्न किया-``बोल ! तू मेरे साथ कहाँ तक ?''

काया ने कहा-``बस करो । मैं तो अधिक से अधिक चिता तक आपके साथ आऊंगी, उससे आगे नहीं ।'' सेठजी अत्यन्त निराश हो गए और उन्हें संसार की अशरणता का भान हो गया ।

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्टे, भार्या गृहद्वारि जनःश्मशाने ।
देहश्चितायां परलोकमार्गे, कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।।

यही हालत है इस संसार में प्राणियों की ।

चक्रवर्ती छह खण्ड के विशाल साम्राज्य को प्राप्त कर उसमें लीन बन जाता है, भोग-विलास में वह डूब जाता है । 64000 स्त्रियों का वह स्वामी होता है, अनेक मुकुटबद्ध राजा उसके चरणों में नित्य नमस्कार करते हैं । वैभव-विलास की उसे कोई कमी नहीं होती और उस समृद्धि में वह अपने आपको त्रिभुवन का अधिपति मान बैठता है ।

परन्तु एक दिन मृत्यु आकर उसका गला दबोच लेती है और उसकी हालत मरियल कुतिया की भाँति हो जाती है । उसके शरीर का तेज समाप्त हो जाता है और वह अशरण्य बना हुआ चारों

ओर शरण की शोध करता है । यह तो हुई चक्रवर्ती की बात । मृत्यु के समय स्वर्ग के सुखों को भोगने वाले देवों की दुर्दशा भी कुछ कम नहीं होती है । छह मास के पूर्व उनके अपने आगामी जन्म का बंध हो जाता है और ज्योंही मृत्यु निकट आती हुई दिखाई देती है-उनके होश-हवास उड़ जाते हैं, दिव्य सुख भी उन्हें तृणवत् लगते हैं, दिव्य अप्सराओं के संग में अब उन्हें आनन्द नहीं आता है अर्थात् मृत्यु के निकट आते ही देवों की स्थिति भी दयनीय बन जाती है ।

अपनी बुद्धि के बल से धन-वैभव को पाकर अभिमान करने वाले, बलिष्ठ शरीर को धारण करने वाले और अपनी बुद्धिमत्ता से अच्छे-अच्छे को मात देने वाले पुरुषों को भी जब मौत दिखाई देती है, तब वे भी हताश हो जाते हैं और चारों ओर मृत्यु से बचने के लिए डॉक्टर-वैद्य आदि को बुलाने के लिए भागदौड़ कराते हैं, किन्तु कोई भी उन्हें मृत्यु से बचा नहीं पाता है ।

जब तक शरण रहित मनुष्य रुपी कीटक, भयंकर यमराज की दृष्टि में नहीं आता है, तभी तक वह जाति आदि मद के भ्रम में घूमता रहता है और गुण के गौरव में खुश रहता है ।

मृत्यु अवश्यम्भावी है

गत जन्मों के पुण्य के उदय से उत्तम जाति, उत्तम कुल और समृद्ध परिवार में जन्म हो गया, तो भी यह बुद्धिमान् मानव अभिमान के शिखर पर चढ़ जाता है और घमण्ड करने लगता है कि **``हम तो ऊँचे कुल वाले हैं, हमारी जाति तुमसे ऊँची है, तुम तो हीन हो, दूर हटो, यहाँ से ।''**

कुछ लक्ष्मी मिल गई तो मानों त्रिभुवन का साम्राज्य मिल गया हो, इस प्रकार गर्व करने लगता है और गरीब व दीन की घोर उपेक्षा करता है । कामदेव के समान सुन्दर, आकर्षक रुप मिल गया, तो अभिमान करेगा । दूसरों की अपेक्षा कुछ विशेष तप कर लिया तो उसका भी अभिमान.....। अरे ! जो ज्ञान अभिमान से दूर रहने की शिक्षा देता है, उसे प्राप्त कर भी मनुष्य अभिमानी बन जाता है । **'मेरे जैसा बुद्धिमान् कोई नहीं, मैं सब कुछ जानता हूँ, मेरी सलाह के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता'** इत्यादि-इत्यादि अभिमान करता रहता है ।

मानव की यह कैसी दुर्दशा है, वह किसी वैभव को पचा नहीं पाता है-
धन मिल गया-धन का अभिमान । रुप मिल गया-रुप का अभिमान ।
बल मिला तो बल का अभिमान । ज्ञान मिला तो ज्ञान का अभिमान ।
ओहो ! वह भूल जाता है कवि की इन पंक्तियों को-

चुन-चुन कंकड़ महल बनाया, आप ही जाकर जंगल सोया ।
इस तन धन की कौन बड़ाई, देखत नयनों में मिट्टी मिलाई ।।

लेकिन समृद्धि के शिखर पर आरुढ़ मानव यह भूल जाता है कि-

मोह से तेरा कमाया धन यहीं रह जाएगा । प्रेम से अति पुष्ट किया तन जलाया जाएगा ।।

मानव अभिमान के शिखर पर तभी तक अलमस्त रहता है, जब तक कृतान्त-यमराज की नजर में वह नहीं आता है । यमराज की नजर में आते ही उसके होश-हवास उड़ जाते हैं और वह अत्यन्त दीन बन जाता है । जन्म के साथ ही मृत्यु जुड़ी हुई है । उस मृत्यु के आगमन के साथ ही नरकीट की स्थिति अत्यन्त दयनीय बन जाती है । **(क्रमशः)**

शासन प्रभावना के समाचार

मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा 5, तीन-तीन बावन जिनालय से सुशोभित, सहस्त्रावधानी **पू.आ. श्री मुनिसुन्दरसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा संतिकर स्तोत्र की रचना स्थली देवकुलपट्टण तीर्थ (देलवाडा-उदयपुर) में पधारे । चार दिन की स्थिरता में प्रतिदिन प्रेरणादायी प्रवचन, समुह सामायिक, दोपहर की वाचना श्रेणी एवं संध्याभक्ति के विविध कार्यक्रम हुए ।

दि. 4 जून को 8 कि.मी. विहार कर 2900 वर्ष प्राचिन श्री शांतिनाथ प्रभु जैन तीर्थ-अद्‌भूतजी पधारे । यहाँ भी एक बावन जिनालय एवं अन्य तीन विशालकाय शिखरबद्ध जिनालय निर्माणाधीन है ।

दि. 5 जून को 10 कि.मी. विहार कर अरिहंत मार्बलस् में स्थिरता की ।

दि. 6 जून को 6 कि.मी. विहार कर सायफन चौराया पधारे ।श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय से गाजते-बाजते श्री संघ द्वारा पूज्यश्री का सामैया किया गया । दिनभर की स्थिरता दिलीपजी जैन के गृहांगण में रही । प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । आज सिद्धांत रक्षक पूज्यपाद आचार्य देव **श्रीमद् विजय सोमचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** की 33 वीं स्वर्गारोहण पूण्यतिथि निमित्त गुणानुवाद सभा हुई । अंत में 50 रुपये की सामुहिक प्रभावना हुई ।

दि. 7 जुन को 4 कि.मी. विहार कर फतेहपुरा में राकेशभाई भण्डारी के गृहांगण में स्थिरता रही । प्रात: 9.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद मिठाई एवं 50 रुपये की प्रभावना हुई ।

उदयपुर नगर प्रवेश

दि. 8 जुन को प्रात: 7.00 बजे श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ-मालदास स्ट्रीट में आयोजित चातुर्मास हेतु पूज्यश्री का उदयपुर शहर में नगर-प्रवेश हुआ । सुपर स्टार म्युजिकल बेन्ड की रमझट के साथ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन संघ-देवाली-उदयपुर में पधारे । धार्मिक पाठशाला की नन्हीं नन्हीं बालिकाओं ने मंगलकलश एवं मांगलिक वस्तुओं से पूज्यश्री को शुभ शगुन दिये ।

जिनालय दर्शन के बाद धर्मसभा का आयोजन हुआ । अमदाबाद से पधारे संकेतभाई ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया । फिर मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी ने आगम की महिमा बताते हुए प्रवचन दिया । अंत में पूज्यश्री ने चातुर्मासिक कर्तव्य बताते हुए प्रेरणादायी प्रवचन दिया । आज जिनालय के शिखर पर कलश की पुन: प्रतिष्ठा निमित्त कलश के पोखणे का चढावा 25,001/- रुपये में गजेन्द्रभाई मेहता परिवार ने लिया ।

अल्पाहार के बाद जिनालय में कलश एवं ध्वजदंड के मंगल विधान हुए । दोपहर 12.02 बजे शुभ मुहूर्त में जिनालय के शिखर पर कलश की पुन: प्रतिष्ठा हुई ।

दि. 9 जुन को 5 कि.मी. विहार कर नवरतन कोंपलेक्ष पधारे । दो दिनों की स्थिरता में प्रात: 9.30 बजे श्री जिरावला पार्श्वनाथ जिनालय के प्रांगण में प्रवचन हुए ।

दि. 11 जुन को 2 कि.मी. विहार कर जंबूद्वीप टावर-भुवाणा में पधारे । श्री पार्श्वनाथ जैन संघ द्वारा प्रथमबार पधारे पूज्यश्री का गाजते-बाजते सामैया किया गया । फिर 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 12 जुन को प्रवचन के बाद रवि मोरडिया, संजयभाई आदि के गृहांगण में पगले हुए ।

दि. 13 जुन को 8 कि.मी. विहार कर हिरणमगरी सेक्टर नं. 3 में पधारे । श्री शांतिनाथ जैन संघ द्वारा गाजते-बाजते पूज्यश्री का सामैया किया गया । यहाँ बिराजमान पूज्य पंन्यास प्रवर श्री निरागरत्नविजयजी आदि से मिलन हुआ । प्रात: 9.30 बजे महावीर भवन में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 14 जुन को प्रात: 6.00 बजे श्री शांतिनाथ जिनालय की 26 वीं ध्वजा के लाभार्थी जीवनलालजी नवीन कुमारजी कंटालिया के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए, फिर जिनालय की नूतन ध्वजा के साथ गाजते-बाजते महावीर भवन में आकर बडे ठाठ-बाठ से सत्रह भेदी पूजा पढाई गई । संगीतकार-मीत शाह-अमदाबाद ने सभी को भक्ति संगीत में जोडा । फिर 10.20 बजे बडे हर्षोल्लास के साथ मंदिरजी के शिखर पर ध्वजा चढाई । आगामी वर्ष की ध्वजा का चढावा 1.08 लाख में शा. भवरलालजी पोरवाल ने लिया ।

दि. 15 से 17 जुन को प्रतिदिन प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए ।

दि. 18 जुन को 1 कि.मी. विहारकर पूज्यश्री श्री शांतिनाथ जैन संघ-हिरणमगरी सेक्टर नं. 4 में पधारे । प्रात: 8.00 बजे श्री संघ की नवकारशी के बाद प्रात: 9.15 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । आज समता साधक सुविशाल गच्छाधिपति **पूज्य आचार्य श्री हेमभूषणसूरीश्वरजी म.सा.** की 17 वीं स्वर्गारोहण पुण्यतिथि निमित्त गुणानुवाद सभा हुई । दि. 19 और 20 जून को भी प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए ।

दि. 21 जुन को 8 कि.मी. विहार कर मार्ग में श्री सविना पार्श्वनाथ जिनालय में दर्शन कर श्री शांतिनाथ जैन संघ-सेक्टर नं. 11 में पधारे । प्रात: 9.00 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । आज हालर रत्न, परोपकार रसिक पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** की 5 वीं स्वर्गारोहण पुण्यतिथि निमित्त पूज्यश्री ने उनके गुणानुवाद किये ।

दि. 22 जुन को प्रात: 9.00 बजे 'जबान पर लगाम' विषय पर पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 23 जुन को 7 कि.मी. विहार कर श्री वासुपूज्य स्वामी जैन संघ-श्री महावीर साधना एवं स्वाध्याय केन्द्र-अम्बामाता-स्कीम में पधारे । दि. 30 जुन तक प्रतिदिन प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए ।

दि. 26 एवं 27 जुन को विहार करके पधारे हुए स्थानकवासी-श्रमण संघ जिनेन्द्र मुनिजी के साथ पूज्यश्री के प्रवचन हुए ।

दि. 30 जुन को पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन के बाद श्री वासुपूज्य जैन संघ-श्री महावीर साधना केन्द्र-अम्बामाता स्कीम के महासचीव फतेहचंदजी मेहता आदि ने पूज्यश्री को आगामी वर्ष 2026 के वर्षावास चातुर्मास हेतु भावभरी विनती की । तत्पश्चात् पूज्यश्री 2 कि.मी. विहार कर श्री पद्मनाथ स्वामी जैन तीर्थ-चौगान मंदिर में पधारे ।

दि. 1 जुलाई को शासनपति श्री महावीर स्वामी भगवान के 2624 वें च्यवन कल्याणक एवं श्री पद्मनाभ स्वामी के च्यवन कल्याणक निमित्त भक्ति संगीत के साथ **च्यवन कल्याणक भावयात्रा** का आयोजन हुआ । संगीतकार शैलेशभाई द्वारा भाववाही स्तुति गान किया गया । पूज्यश्री ने भगवान महावीर एवं भगवान पद्मनाभ स्वामी अर्थात् श्रेणिक महाराजा के जीवन चरित्र का मार्मिक वर्णन किया । कार्यक्रम के पश्चात् पधारे हुए सभी महानुभावों की साधर्मिक भक्ति हुई । दि. 3 जुलाई को प्रात: 9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

भव्य चातुर्मास प्रवेश

दि. 4 जुलाई को श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ-मालदास स्ट्रीट उदयपुर की वर्षों की भावना की फलश्रुति स्वरुप भव्य चातुर्मास प्रवेश की मंगल घडियाँ आ गई । प्रात: 7.30 बजे चौगान मंदिर परिसर के भोजन खंड में सकलश्री संघ की नवकारशी हुई । तत्पश्चात् 9.00 बजे

चातुर्मास प्रवेश यात्रा का शुभारंभ हुआ । चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी शा. जसवन्तसिंहजी सुराणा परिवार की हाथी सवारी, 4 घोडे, श्री हीरसूरि पाठशाला के बालक एवं बालिकाओं ने शासन ध्वज धारणकर शोभा बढाई, पूज्य आचार्य श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी की तस्विरों से सुशोभित बग्गियाँ, मास्टर म्युजिकल बेन्ड की रमझट के साथ साजन-माजन से युक्त प्रवेश यात्रा चौगान मंदिर से प्रारंभ होकर शिक्षा सर्कल, चेटक सर्कल, हाथी पोल होकर आराधना भवन मालदास स्ट्रीट में संपन्न हुई ।

श्री संघ की विविध महिला मंडलों की बहन एवं श्री रत्नभक्ति महिला मंडल कर्जत की बहनों ने मंगल कलश सहित प्रदक्षिणा देकर चातुर्मास प्रवेश निमित्त शुभ शगुन दिये । तत्पश्चात् धर्मसभा का आयोजन हुआ । सुप्रसिद्ध संगीतकार **अनिलभाई गेमावत** के द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के साथ पूज्यश्री का मंगल प्रवेश हुआ । गुरुवंदन एवं मंगलाचरण के बाद विविध महिला मंडलों की बहनों द्वारा स्वागत गीत गहुँली का गान किया गया । फिर श्री संघ के पदाधिकारी शैलेन्द्रजी हीरण, राजेशभाई जावरिया, कुलदीपजी नाहर, राजेन्द्रजी नागोरी, चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी **जसवंत सिंहजी सुराणा**, तथा आमंत्रित महेमान-भरतभाई कोठारी, भरतभाई छाजेड, अमीतभाई मण्डलेशा, सुशीलजी बांठिया ने ज्ञानदीपक प्रकट कर पूज्य आ. श्री रामचन्द्रसूरिजी एवं पूज्य पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी की तस्वीरों पर माल्यार्पण किया । चातुर्मास प्रवेश के अवसर पर गुरुपूजन का चढावा 2.07 लाख में सादडी निवासी मातुश्री रतनबेन धनराजजी रांका परिवार-चिंचवड वालो ने लिया एवं तुरंत राशी जमा करा दी । तथा कामली वहोराने का चढावा 1.51 लाख में मातुश्री सरसोबाई हरकचंदजी कोठारी-बाली हस्ते भरतभाई कोठारी एवं मातुश्री हुलसीबाई चुन्निलालजी छाजेड-सेवाडी हस्ते भरतभाई छाजेड द्वारा लिया गया । तत्पश्चात् पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । गुरुपूजन एवं कामली वहोराने की क्रिया के बाद पूज्यश्री द्वारा आलिखित **255 वीं पुस्तक ''10 श्रमण धर्म''** का भव्य विमोचन शांतिलालजी चौपडा, भावेशभाई चौपडा, हसमुखभाई मेहता, निलेशजी जैन, फतेहचंदजी मेहता, छगनराजजी वकिल-पोसालिया, जुगराजजी पुनमिया, रमेशजी पुनमिया, तुषारभाई रांका आदि के द्वारा किया गया । इस शुभ प्रसंग पर श्री वासुपूज्य स्वामी जैन संघ- महावीर साधना केन्द्र अम्बामाता स्कीम-उदयपुर की ओर से पूज्यश्री को आगामी वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु पुनः भावभरी विनती की गई । कार्यक्रम के पश्चात् सामुहिक रुप से 400 रुपये की प्रभावना एवं साधर्मिक भक्ति हुई ।

आगामी कार्यक्रम

2nd Oct. 2025, आसो सुदी-10, वि.सं. 2081 से

श्री श्वे. मू. श्री जैन संघ मालदास स्ट्रीट के तत्त्वावधान में

महावीर जैन विद्यालय-चित्रकूट नगर में पूज्य आचार्य भगवंत की

तारक निश्रा में महामंगलकारी उपधान तप प्रारंभ होगा ।

इच्छुक महानुभाव शीघ्र अपना फॉर्म भरकर पेढी पर जमा कराएं ।

संपर्क सूत्र :

डॉ. शैलेन्द्रजी हिरण M. 9414159059, **राजेशजी जावरिया** M. 98292 56648

सेवक सहदेव M. 9867204942

दिव्य संदेश प्रकाशन आयोजित 'महापुरुष भाग-1' (Open Book Exam) ई.सन्. 2025 पर आधारित परीक्षा पत्र परिणाम–Result

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
1.	ज्योति शाह	मुंबई	197.5
1.	वंदना बोहरा	अंकलेश्वर	197.5
2.	हीना नागोरी	उदयपुर	197
3.	ईश्वर पटेल	उज्जैन	196.5
4.	चंद्रा	हैद्राबाद	196
5.	तारीका शाह	हिंगोली	196
6.	ज्योति बी. शाह	मुंबई	195
7.	स्नेहल छाजेड	पुणे	195
8.	टीना जैन	गुंटुर	194
9.	अल्का गोलेच्छा	भवानी मण्डी	193
10.	अंजु जैन	चंडीगढ	193
11.	देवीलाल कोठारी	केलवा	193
12.	डॉ. आभा गांधी	चित्तोडगढ	193
13.	हंसा भानावत	उदयपुर	193
14.	ज्योति डागा	सुरतगढ	193
15.	काजल शाह	वडोदरा	193
16.	कुसुम फोफलीया	जयपुर	193
17.	ममता महेता	बार्शी	193
18.	मनीष बरेटा	मानसा	193
19.	नरेन्द्र जैन	रायचुर	193
20.	निशा जैन	दुबई	193
21.	निशा परमार	नरसापुर	193
22.	प्रेमलता जैन	अजमेर	193
23.	राजकुमार बांठिया	पाली	193
24.	रोडबाई लोढा	वसई	193
25.	साधना छाजेड	कराही	193
26.	साध्वी ज्योतिप्रभाजी	भीलवाडा	193
27.	शालिनी भण्डारी	इन्दौर	193
28.	सुनिता जैन	दिल्ही	193
29.	तरुणा महेता	भीलवाडा	193
30.	यशस्वी जैन	सीरसा	193
31.	भारती बोथरा	मुर्शिदाबाद	192
32.	चंद्रा बोहरा	रायचुर	192
33.	डॉ. बिना जारोली	वडोदरा	192
34.	इन्दिरा लोढा	असीफाबाद	192
35.	जागृति शाह	अहमदाबाद	192
36.	खुश्बु भण्साली	चित्रदुर्गा	192
37.	किरणदेवी शेठीया	बीकानेर	192
38.	निलम ओसवाल	रत्नागिरी	192
39.	प्रमिला कीमती	इन्दौर	192
40.	प्रेमलता जैन	आनंद	192
41.	प्रियंका धुपिया	सुरत	192
42.	प्रमिला पोखरना	धुलिया	192
43.	रीता महेता	मंदसोर	192
44.	रेणुका कांकरीया	यवतमाल	192
45.	रुपल महेता	के.जी.एफ.	192
46.	सरोज गोलेचा	रजनानदगांव	192
47.	सरोज संघवी	बेंगलोर	192
48.	श्वेता बोरुंदीया	यवतमाल	192
49.	सुशीला रांका	जलगांव	192
50.	अभिलाषा जैन	इन्दौर	191
51.	नमिता गांधी	रत्नागिरि	191
52.	नानसी जैन	शिवगंज	191
53.	रजनी सिंगला	जाखल मण्डी	191
54.	सपना खातोड	सुरत	191
55.	उषा टाटिया	सिंदखेडा	191

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक	क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
56.	बबीता जैन	हरियाणा	190	88.	इला लालन	मुंबई	187
57.	दर्शना जैन	हीसार	190	89.	जयश्री जैन	मुंबई	187
58.	मीना गांधी	जमखण्डी	190	90.	नेहा जैन	चौमहला	187
59.	पुजा जैन	धार	190	91.	रेखा पारेख	राजकोट	187
60.	साधना जैन	पंजाब	190	92.	रीता जैन	पुणे	187
61.	साध्वी किरणप्रभा	सुरत	190	93.	साक्षी जैन	सीरसा	187
62.	साध्वी प्रतिभाजी	भीलवाडा	190	94.	सरोज बण्डी	प्रतापगढ	187
63.	सज्जन जैन	शिवगंज	190	95.	सरोज डगलिया	भीलवाडा	187
64.	संजु गोलेचा	हावरा	190	96.	सीमा संघवी	बल्लारी	187
65.	आयुषी जैन	दिल्ही	189	97.	सुरभी जैन	उज्जैन	187
66.	बरखा जैन	इन्दौर	189	98.	सुशमा जैन	सीरसा	187
67.	चित्रा जैन	दिल्ही	189	99.	उगमदेवी जैन	सिकंदराबाद	187
68.	ममता जैन	हावरा	189	100.	अल्का जैन	सिरसा	186
69.	निर्मला नाहर	चैन्नइ	189	101.	अर्चना श्रीमाल	रतलाम	186
70.	निशीता जैन	रत्नागिरि	189	102.	चंचलबाई जैन	सिकंद्राबाद	186
71.	पुष्पा बोहरा	सिकंदराबाद	189	103.	मंजु पोखरना	जयपुर	186
72.	राकेश जैन	सुरत	189	104.	मोनिका देशलेहरा	हैद्राबाद	186
73.	सोनु मालु	इचलकरंजी	189	105.	रीना मीत्तल	गंगापुर सिटी	186
74.	वैशाली सींगला	जाखल मण्डी	189	106.	संतोष जैन	दिल्ही	186
75.	वनिता जैन	इन्दौर	189	107.	सीमा गांधी	चैन्नई	186
76.	आरती जैन	गंगापुर सिटी	188	108.	शांतिदेवी दोशी	बेंग्लोर	186
77.	हर्षा सांकला	प्रतापगढ	188	109.	शशी रांका	इन्दौर	186
78.	लिला गांधी	वडोदरा	188	110.	उर्वी महेता	राजकोट	186
79.	सरला परमार	पुणे	188	111.	उषा जैन	इन्दोर	186
80.	सरोज श्रीमाल	रतलाम	188	112.	उषा जैन	सिरसा	186
81.	स्नेह जैन	लुधीयाना	188	113.	विद्या पोरवाल	बिजापुर	186
82.	तारा जैन	इन्दौर	188	114.	बिना जैन	दिल्ही	185
83.	वीणा ओसवाल	कर्जत	188	115.	भारती गांधी	मुंबई	185
84.	आवृत्ति कसवा	मुंबई	187	116.	चंदा कोठारी	रत्नागिरी	185
85.	डॉ. रुपरेखा जैन	चैन्नई	187	117.	हंसा शाह	मुंबई	185
86.	गुणबालाजी तलेसरा	पाली	187	118.	कल्पना शाह	अहमदाबाद	185
87.	हंसाली बोथरा	सावटा	187	119.	किरण छाजेड	इन्दौर	185

क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक	क्रम	नाम	शहर	प्राप्तांक
120.	मंजुलाबेन शाह	मैसुर	185	152.	अंजुला नाहर	इन्दौर	180
121.	नेहा रायसोनी	सिकंदराबाद	185	153.	रक्षा गांधी	रत्नागिरि	180
122.	निर्मला बच्छावत	फलौदी	185	154.	रेणुका शाह	अहमदाबाद	180
123.	आर. इंदु जैन	इरोड	185	155.	साध्वी कमलप्रभाजी	भिलवाडा	180
124.	रचना सोनी	हिंगोली	185	156.	ज्योत्सना शाह	वडोदरा	178
125.	श्वेता भलगट	रत्नागिरि	185	157.	शांता लोडाया	करंजा	178
126.	सिम्पली खातोड	भिलवाडा	185	158.	सोनाली भण्साली	अहमदाबाद	178
127.	उषा जैन	मोहली	185	159.	ममता गुंदेचा	रत्नागिरि	175
128.	भावना शाह	अहमदाबाद	184	160.	संगीता ओसवाल	विजयपुर	174
129.	दर्शना शाह	मुंबई	184	161.	पन्नाबेन दोशी	राजकोट	173
130.	हर्षा ओसवाल	पुणे	184	162.	श्वेता जैन	दालोट	172
131.	मनीष सुराना	चित्तोडगढ	184	163.	अनिता श्रीमाल	रतलाम	171
132.	मीना बोथरा	इचलकरंजी	184	164.	चेतना सुराना	औरंगाबाद	170
133.	मीना गुंदेचा	रत्नागिरि	184	165.	कविता अच्छा	बैंग्लोर	170
134.	मीनु जैन	लुधीयाना	184	166.	स्वप्ना गुंदेचा	रत्नागिरि	170
135.	पुनम ओसवाल	रत्नागिरि	184	167.	इन्द्रा संघवी	शिवगंज	167
136.	आर. शोभा गुंदेचा	चैन्नई	184	168.	पिंकी जैन	रत्नागिरि	165
137.	शारदा ओसवाल	बिजापुर	184	169.	रणजीत गुंदेचा	रत्नागिरि	165
138.	स्मिता जैन	सिरसा	184	170.	पुजा गुंदेचा	रत्नागिरि	161
139.	कल्पज्ञाश्रीजी	लुधीयाना	183	171.	डिम्पल जैन	भिलवाडा	160
140.	रामा कोठारी	रतलाम	183	172.	प्रदीप ओरा	जावरा	160
141.	उर्मिला जैन	बैंग्लोर	183	173.	रंजना लुंकड	कल्याण	160
142.	डिंपल वीरा	मुंबई	182	174.	पिंकी ओसवाल	कोल्हापुर	156
143.	रेणुका जैन	इन्दौर	182	175.	रेखा बोहरा	बेग	156
144.	शशी जैन	गंगापुर सिटी	182	176.	रिंकु गांधी	रत्नागिरि	156
145.	शिल्पा शाह	करनड	182	177.	लता जैन	बैंग्लोर	155
146.	इन्दु जैन	बिराजपुर	181	178.	हीराचंद जैन	मुंबई	153
147.	नरेन्द्रकुमार बांठिया	कोलकत्ता	181	179.	अनिता महेता	जोधपुर	151
148.	पद्मा जैन	बाली	181	180.	उषा जैन	नीमच	146
149.	पूर्णिमा नायर	पुणे	181	181.	ललिता जैन	नलखेडा	131
150.	राधा बोहरा	बैंग्लोर	181	182.	मधुबेन विनोदजी	चैन्नई	130
151.	संगीता महेता	शिवगंज	181				

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month

चातुर्मास प्रवेश के मंगल क्षण दि. 4-7-2025

ज्ञानदीपक

गुरुपूजन

कामली अर्पण

255 वीं 10 श्रमण धर्म पुस्तक विमोचन

उपस्थित जनमेदिनी

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

To,

From :

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4, Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E), Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN